विचारायन

हिंदी विभाग

हिंदी विभाग वार्षिक पत्रिका

सत्र 2025-26

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

हिंदी विभाग की वार्षिक पत्रिका 'विचारायन' (सत्र 2025–26) में आपका हार्दिक स्वागत है। यह अंक हमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल इंडिया की उस यात्रा में ले जाता है, जो आज हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है।

हम एक ऐसे समय में जी रहे हैं जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल तकनीक नहीं, बल्कि जीवनशैली बनती जा रही है। सीखने, सोचने और अभिव्यक्ति के हमारे तरीक़े तेजी से बदल रहे हैं। AI हमारे व्यक्तिगत, शैक्षणिक और व्यावसायिक जीवन में गहराई से समाहित हो चुका है। कभी सुविधा के रूप में, तो कभी चुनौती के रूप में। यह जीवन को सरल बनाता है, पर साथ ही कई नए प्रश्न भी खड़े करता है।

इस अंक में हमने AI के विभिन्न आयामों को समझने का प्रयास किया है: उसकी संभावनाएँ, उसकी सीमाएँ, और उसके साथ जुड़ी नैतिक जटिलताएँ। मौलिकता की बदलती परिभाषा, शैक्षणिक ईमानदारी पर उसका प्रभाव, और डिजिटल युग में भारत की भूमिका जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी विचार किया गया है।

निस्संदेह, AI हमारी कार्यक्षमता बढ़ाता है और अनेक एकरस कार्यों को सरल बनाता है, लेकिन इसके साथ यह आशंका भी जुड़ी है कि कहीं हम अपनी रचनात्मकता और मानवीय संवेदनशीलता से दूर न होते जाएँ। आज जब AI हर क्षेत्र, असाइनमेंट से लेकर ईमेल, और कोडिंग से लेकर दैनिक जीवन के निर्णयों तक, में उपस्थित है, तब यह आवश्यक हो जाता है कि हम इसके उपयोग के प्रति सजग रहें।

यह भी विचारणीय है कि कहीं इस बढ़ती निर्भरता के बीच हम अपने मूलभूत कौशलों और स्वाभाविक बुद्धिमत्ता को नज़रअंदाज़ तो नहीं कर रहे। आखिरकार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उद्देश्य मानव बुद्धिमत्ता का स्थान लेना नहीं, बल्कि उसे सहयोग देना है।

'विचारायन' का यह अंक इसी संतुलन की खोज है: प्रगति और मानवीय मूल्यों के बीच। यह हमें न केवल तकनीकी परिवर्तन को समझने के लिए प्रेरित करता है, बल्कि यह भी सोचने के लिए विवश करता है कि क्या हर प्रश्न का उत्तर किसी एल्गोरिथ्म के पास है, या कुछ उत्तर हमें स्वयं के भीतर खोजने होंगे।

आशा है कि यह संकलन आपको सोचने, प्रश्न करने और नए दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रेरित करेगा।

- संपादकीय मंडल
विचारायन
हिंदी साहित्य परिषद, गार्गी महाविद्यालय

प्रिय विद्यार्थियों,

मैं गार्गी महाविद्यालय के समस्त छात्राओं एवं शिक्षकों को वार्षिक पत्रिका "विचारायन" के 7वें अंक के प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ।

यह पत्रिका न केवल छात्राओं की साहित्यिक अभिरुचि को प्रोत्साहित करती है, बल्कि उनकी सृजनात्मक क्षमताओं को निखारने एवं विकसित करने का एक सशक्त माध्यम भी है। इसके माध्यम से विद्यार्थी समसामयिक विषयों पर अपने विचारों एवं भावनाओं को कविता, कहानी तथा विभिन्न लेखों के रूप में प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करते हैं।

इस वर्ष भी यह पत्रिका छात्राओं को सृजनात्मक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करेगी तथा उन्हें अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का उत्कृष्ट मंच प्रदान करेगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष का अंक भी ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

मेरी हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

- प्रो. वंदना लूथरा
प्राचार्या
गार्गी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

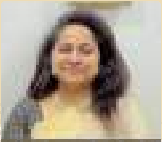

प्रिय पाठकों,

हिंदी साहित्य परिषद की ओर से प्रकाशित वार्षिक ई-पत्रिका 'विचारायन' (सत्र 2025–26) के इस नवीन अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता और संतोष का अनुभव हो रहा है।

यह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे विद्यार्थियों की सृजनात्मक चेतना, साहित्यिक अभिरुचि और वैचारिक परिपक्वता का सजीव प्रतिबिंब है। इस अंक के माध्यम से छात्राओं ने समसामयिक विषयों, विशेषकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल परिवेश, पर अपने विचारों को कविता, कहानी, लेख एवं अन्य साहित्यिक विधाओं में संवेदनशीलता और गहराई के साथ अभिव्यक्त किया है।

इस पत्रिका के निर्माण की प्रक्रिया विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण सीखने का अवसर भी रही है। इस दौरान उन्होंने न केवल अपने लेखन कौशल को निखारा, बल्कि सामूहिक कार्य, अनुशासन और रचनात्मक उत्तरदायित्व का भी अनुभव प्राप्त किया। परिषद की टीम ने समर्पण और निरंतर प्रयास के साथ इस अंक को आकार दिया है, जिसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं।

मुझे विश्वास है कि 'विचारायन' का यह अंक पाठकों के लिए न केवल ज्ञानवर्धक होगा, बल्कि उन्हें सोचने, समझने और नए दृष्टिकोण विकसित करने के लिए भी प्रेरित करेगा।

अंत में, मैं सभी विद्यार्थियों, सहयोगी शिक्षकों एवं परिषद के सदस्यों को इस सफल प्रयास के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ और आशा करती हूँ कि भविष्य में भी हम इसी प्रकार साहित्यिक उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर रहेंगे।

- डॉ. कृष्णा मीणा
शिक्षिका संयोजिका
हिंदी साहित्य परिषद
गार्गी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रिय पाठकों,

'विचारायन' हिन्दी विभाग द्वारा प्रकाशित पत्रिका एक बार पुनः प्रकाशित रूप में प्रस्तुत है। युवा पीढ़ी में अपार संभावनाएं होती हैं। महाविद्यालय का मंच उन्हें ऐसे अवसर प्रदान करता है जहां वे अपनी प्रतिभा को और निखारते हैं। बस उन्हें एक सतत मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। पत्रिका में छात्राओं की रचनात्मकता का भरपूर प्रयोग किया गया है। विचारायन का यह अंक निश्चित रूप से विभिन्न विषयों के रंगों से सजा -संवरा होगा। हिन्दी विशेष बच्चे अपने सिलेबस के अंतर्गत भी जो कविता, कहानी, उपन्यास एवं कथेतर साहित्य पढ़ते हैं उनके पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में लेखन भी अनिवार्य रूप में शामिल ही होता है। छंद, अलंकार उनके लिखने के टूल्स की तरह सहायक बनते हैं। कहानी उनमें उनकी अपनी क ई तरह अनुभूतियों को जगाने में प्रेरक बनती है।

पत्रिका का उद्देश्य हमारी छात्राओं के लिए न केवल उन्हें लिखने के लिए प्रेरित करना है अपितु उनके लेखन के माध्यम से उनमें उस आत्मविश्वास को भी भरना है जो महाविद्यालय की पढ़ाई के उपरांत भी जीवित रहे , संभवतः उनमें से कुछ भविष्य में हमें अच्छी लेखिकाओं के रूप में प्राप्त हों।

उनके द्वारा लिखित रचनाएं अवश्य ही सबको भाएंगी और आने वाली पीढ़ी को भी प्रोत्साहित करेंगी।

विचारायन के माध्यम से हम गार्गी की अधिक से अधिक छात्राओं को लिखने के लिए प्रेरित और आकर्षित करना चाहते हैं।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

- डॉ. वीणा शर्मा
विभाग प्रभारी, हिंदी विभाग
गार्गी महाविद्यालय

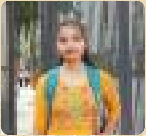

हिन्दी की अनेक विधाओं में अपनी अनुभूति,ऐतिहासिक, तार्किक, समसामयिक, प्रेम ,नारी आदि विविध विषयों पर अत्यंत बेहतरीन रचनाओं के जरिए गार्गी महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की वार्षिक पत्रिका "विचारायन" को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रही हूं। "विचारायन" पत्रिका हमेशा से विभाग की छात्राओं के लिए एक खुला मंच प्रदान करती आई है जिसमें छात्राएं किसी शैली, विधा, विषय आदि के बंधनों से मुक्त होकर अपने विचार तथा भावनाओं को शब्दों में पिरोया है।

पत्रिका के प्रकाशन में डॉ कृष्णा मीणा मैम से शुरू से ही प्रेरणा एवं सहयोग मिला है, जिसके लिए हम उन्हें हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। पत्रिका के सभी रचनाकार तथा लेखक साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं तथा विचारों से पत्रिका को सफल बनाया है तथा सभी ग्राफिक डिजाइनर, संपादक, प्रूफ शोधक धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने अपनी अतुलनीय कलाकृति के माध्यम से पत्रिका को अलंकृत करने में अपना कीमती योगदान दिया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि विविधता में एकता को दर्शाती हुई यह पत्रिका अपने बहुआयामी दायित्व में पूर्ण रूपेण सफलता प्राप्त करेगी। पत्रिका की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं!

- स्नेहलता (अध्यक्षा)
हिन्दी साहित्य परिषद, गार्गी महाविद्यालय

शिक्षक गण

डॉ. मीना

डॉ. श्रीनिवास त्यागी

डॉ. वीणा शर्मा

डॉ. अनीता यादव

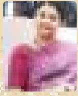
डॉ. स्वाति श्वेता

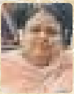
डॉ. पार्वती चांदला शर्मा

डॉ. कृष्णा मीणा

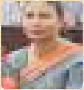
डॉ. आरती पाण्डेय

डॉ. मनोरमा गौतम

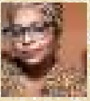
डॉ. नीरा जलक्षत्रि

डॉ. प्रदीप कुमार सिंह

डॉ. काजल

डॉ.रणजीत यादव

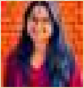
डॉ. एकता वर्मा

हिंदी विभाग- समस्त शिक्षक गण

बाएँ से दाएँ: डॉ. आरती पांडे, डॉ. अनीता यादव, डॉ. पार्वती चांदला शर्मा, डॉ. कृष्णा मीणा, डॉ. मीना, डॉ. श्रीनिवास त्यागी, डॉ. स्वाति श्वेता, डॉ. वीणा शर्मा

छात्रा-संघ

स्नेहलता
(अध्यक्षा)

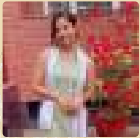

शैली चौधरी
(उप-अध्यक्षा)

निशु
(संस्कृतिक सचिव)

अंशिका
(कोषाध्यक्ष)

लुबना फरहीन
(कुलानुशासिका)

कक्षा-प्रतिनिधि

रितु
चतुर्थ वर्ष

स्मिता राज
चतुर्थ वर्ष

ज्योति सिंह
तृतीय वर्ष

आकांक्षा कर्णवाल
तृतीय वर्ष

कक्षा-प्रतिनिधि

शताक्षी सिंह
द्वितीय वर्ष

प्रिया पाण्डेय
द्वितीय वर्ष

अनुप्रिया यादव
प्रथम वर्ष

नीतू चंदेल
प्रथम वर्ष

संपादक मंडल

शिक्षिका संयोजिका एवं संपादक

डॉ. कृष्णा मीणा
असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग एवं शिक्षिका संयोजिका,
हिंदी साहित्य परिषद

छात्रा संपादक मंडल:

1.शताक्षी सिंह (द्वितीय वर्ष)
2. प्रिया पांडे (द्वितीय वर्ष).
3. अंशिका (द्वितीय वर्ष).
4. प्रिया (द्वितीय वर्ष).

प्रूफ शोधक:

1. स्नेहलता (अध्यक्षा)
2. शैली चौधरी (उपाध्यक्षा)
3. अंशिका (कोषाध्यक्ष)
4. लुबना फरहीन (कुलानुशासिक
5.प्रिया (द्वितीय वर्ष)

ग्राफिक डिज़ाइनर:

1. शताक्षी सिंह (द्वितीय वर्ष)
2. प्रिया (द्वितीय वर्ष)

अनुक्रमणिका

सं.	नाम	विषय	वर्ष
१.	शैली चौधरी	सपनों की उड़ान	द्वितीय
२.	अंजु वर्मा	प्रिय मित्र	द्वितीय
३.	किर्ति बंसल	बंदिशों के बीच...	प्रथम
४.	दिव्या कुमारी	जबरदस्ती क्यों?	प्रथम
५.	किर्ती बंसल	मेरा हिंदुस्तान	प्रथम
६.	अंजु वर्मा	सोच रही हूँ....	द्वितीय
७.	किर्ति बंसल	इंशानियत कहा है?	प्रथम
८.	दिव्या कुमारी	गुरु माँ...	प्रथम
९.	अंजु वर्मा	संघर्ष	द्वितीय
१०.	किर्ति बंसल	हम भारतीय...	प्रथम
११.	दिव्या कुमारी	कलम का बादशाह	प्रथम
१२.	अंजु वर्मा	टूटते सपने	द्वितीय
१३.	किर्ति बंसल	अस्मिता की सौदा	प्रथम
१४.	दिव्या कुमारी	मंज़िल	प्रथम
१५.	अंजु वर्मा	6 मार्च 2025	द्वितीय

सं.	नाम	विषय	वर्ष
१६.	किर्ति बंसल	बूंद से समुंदर तक	प्रथम
१७.	दिव्या कुमारी	मन का किस्सा	प्रथम
१८.	किर्ति बंसल	दिल की उलझन	प्रथम
१९.	अंशिका	मिडल क्लास	द्वितीय
२०.	किर्ति बंसल	अपनों के बीच तन्हा	प्रथम
२१.	शैली चौधरी	विदाई का अर्थ	द्वितीय
२२.	किर्ति बंसल	मंज़िलो की ओर	प्रथम
२३.	दिव्या कुमारी	ज़माने की नज़र	प्रथम

सपनो की उड़ान

कुछ सपने आँखों में पलते हैं,
कुछ दिल में चुपके से चलते हैं।
रास्ते चाहे कितने कठिन हों,
हौसले फिर भी आगे बढ़ते हैं।

कभी गिरते हैं, कभी संभलते हैं,
फिर भी मंज़िल की ओर निकलते हैं।
यही तो युवाओं की पहचान है,
सपनों से ही तो नई उड़ान है।

हर मुश्किल एक सीख बन जाती है,
हर कोशिश एक कहानी कह जाती है।
जो अपने सपनों पर विश्वास करते हैं,
वही जीवन में इतिहास रचते हैं।

- शैली चौधरी
बी. ए. हिंदी (विशेष)
द्वितीय वर्ष

प्रिय मित्र

कुछ यादें पुरानी आज याद आ गई,
भूली हुई ज़िंदगी की एहसास आ गई।

वर्ष बीत गया था उससे बात किए हुए,
ऐसा लग रहा था, वह ज़िंदगी दोबारा साथ आ गई।

पहली बार मिली थी, मिलते ही रिश्तेदार बन गई,
मैं उसकी दूर की मामी की लड़की,
वह मेरी दूर की बुआ की लड़की,
लेकिन स्कूल की दूसरी प्यारी यार बन गई।

कुछ यादें पुरानी आज याद आ गई,
भूली हुई ज़िंदगी की एहसास आ गई।

रूठी थी बहुत मुझसे, शायद मैं भी रूठ जाया करती थी उससे,
लेकिन बातें तो कुछ उसमें खास थीं (हैं)।

कहती मुझे, तुम पढ़ो,
तुम्हें सुनकर ही मुझे सब याद हो जाता है,
यही बातें तो उसमें खास हैं,
आज भी ये बातें कहीं न कहीं उर में एहसास हैं।

साथ रहे हम, खाए-पिए हम,
जीवन के कुछ समय को साथ बिताए हम,

लेकिन स्कूल से विदाई हो गई और हमारी जुदाई हो गई।

फिर दूरियों में तो दूर हो गए,
पहुंच गई वह जीवन-दान में (मेडिकल लाइन),

और मैं जीवन के ज्ञान में (साहित्य में)।

अब हमारे पास दिलों का ही तार है,
और भाषा का दूर-भाषा (मोबाइल) संचार है।

ऐसा लगने लगा कि अब दिखावे में जीने लगे सब,
बातों-बातों में कुछ बात हुआ,
और दोस्ती में तकरार हुआ।

बरस हो गया था उससे बात किए,
आज कुछ पल वापस लौट आए,
थोड़ी देर तक पहचान न पाई,
लेकिन देर से सही, काम से कम याद आई।

बीत गए घंटे में समय कुछ पता ही न चला,
लगा ही नहीं कि हम कभी रूठे भी हैं।

बस चुपचाप सुनती रही वह मेरी बातें,
बस यही कहती रही कि आखिर क्यों थी तुम रूठी,
मैं बकबकती गई, वह सुनती गई,
क्यों करती है चिंता तू इतनी, बस यही समझती रही।

आज जीवन की खुशियाँ थोड़ी-सी वापस चली आई,
अंधेरी इस जीवन में सूर्य की एक किरण रोशनी लाई।

- अंजू वर्मा
बी. ए. हिन्दी (विशेष)
द्वितीय वर्ष

बंदिशों के बीच एक आवाज़

कुछ इस कदर बंदिशें हैं
कि हम किसी से खुलकर बात भी नहीं कर सकते।
ये हालात केवल हम महिलाओं के ही क्यों होते हैं?

हमें ही अपने ही घर में कैदी क्यों बना दिया जाता है?

क्यों हमें खुलकर जीने का अधिकार नहीं मिलता?

क्यों हमें वो आज़ादी नहीं होती
कि हम भी खुलकर मुस्कुरा सकें?

समाज और परिवार की जिम्मेदारी और
इज्जत का ठेका सिर्फ हम पर ही क्यों होता है?

जब जिम्मेदारियाँ ज्यादा होती हैं,
तो आगे हम ही क्यों आते हैं?

क्यों हमें खुद से मिलने की भी आज़ादी नहीं होती?

माना कि हमें जन्म उन्होंने दिया है,
हमारा भला-बुरा वे हमसे बेहतर समझते हैं,
पर अगर थोड़ा हमें भी समझ लें, तो क्या होगा?

इतनी बंदिशें होंगी,
तो कहीं हम भी गलत कदम न उठा बैठें,
कहीं हम भी अपनों से दूर न हो जाएँ।

उन्हें भी हमारी सोच से मेल खाना होगा,
कुछ हम समझें,
कुछ उन्हें समझना होगा।

नहीं तो वो दिन दूर नहीं,
जब रास्ते हमें अपनों से ही अलग कर देंगे,
और कहीं हम गलत राह पर निकल जाएँगे।

अब समझना होगा...
अब समझाना होगा।

कीर्ति बंसल
बी. ए. विशेष (हिन्दी)
प्रथम वर्ष

जबर्दस्ती क्यों?

सड़क पर चलती गाड़ियों की भीड़ देखकर,
ऐसा लगा—
जैसे नदियाँ बहना छोड़ती नहीं,
वैसे ही सड़कें कभी खाली होती नहीं।
सुबह से आधी रात तक
भीड़ खत्म होती नहीं।

ये भीड़ केवल सफ़र का नहीं,
हर उस व्यक्ति की जद्दोजहद है,
जो कुछ पाने की चाह में दौड़ रहा है—
बच्चे स्कूल के लिए,
तो जवान रोज़गार के लिए,
विद्यार्थी कॉलेज के लिए,
तो बुजुर्ग दवाई के लिए।

सबकी दिनचर्या
इन्हीं चंद कामों में सिमटी है,
जो शायद हमारे लिए पर्याप्त नहीं,
फिर भी लोग सोचते हैं—
हमारा जितना संघर्ष
किसी का नहीं।

हम खुद पर ध्यान देते नहीं,
जैसे हमें खुद की जरूरत नहीं,
रोज़ स्वार्थ के लिए किए गए दौड़ को
संघर्ष का नाम दे देते हैं लोग,
जब होते असफल तो,
खुद को कोसते थकते नहीं लोग।।

जब खुद पर काम कभी किया नहीं,
तो खुद से आशा रखते क्यों हैं?
जब सच्चाई पता है,
तो जबर्दस्ती करते क्यों हैं?

(क्योंकि सबसे कठिन युद्ध होता है)
(-इंसान का खुद से जीतना)

दिव्या कुमारी
बी. ए. विशेष (हिन्दी)
प्रथम वर्ष

मेरा हिंदुस्तान

कैसे कैसे इस धरती पर हुए वीर जवान,
जय जय हिंदुस्तान मेरा, जय जय हिंदुस्तान।।

जालियाँवाले बाग के अंदर कई बेटे बलिदान हुए,
हिंदू हिंदुस्तानी सेवा में कुर्बान हुए,
जय हिंदुस्तान मेरा, जय जय हिंदुस्तान।।

बाँध लंगोटी, हाथ में सोटी लेकर बापू घूमा था,
वीर तिरंगा देश का झंडा, नेता जी ने चूमा था,
लाल किले पर इसे चढ़ा कर वीर जवान झूमा था,
जय जय हिंदुस्तान मेरा, जय जय हिंदुस्तान।।

फाँसी के तख्ते पर चढ़कर भगत सिंह मुसकाया था,
तब गोरे अंग्रेजों का सिंहासन थर्राया था,
जय जय हिंदुस्तान मेरा, जय जय हिंदुस्तान।।

जय हिंद
जय भारत।।

- कीर्ति बंसल
बी. ए. (हिन्दी) विशेष
प्रथम वर्ष

सोच रही हूँ एक किताब लिखूँ..

सोच रही हूँ, एक किताब लिखूँ
जीवन के हर लम्हों का सार लिखूँ,
दोस्तों का प्यार लिखूँ,
कि उनके साथ बिताए यादों का विस्तार लिखूँ।

खिलखिलाती जब स्कूल में बैठकर,
कभी घास पर, कभी नीम के नीचे,
कलम लिए हाथ में रगड़ती थी,
कभी बाल में तो कभी घिसती कॉपी-किताब पर।

कभी तो ऐसा लगता कि अब तो मेरा परिवार स्कूल बन गया,
जहाँ बीत जाता पूरा दिन,
इन बीते हुए पलों का याद लिखूँ,
सोच रही हूँ एक किताब लिखूँ।

कभी रूठ जाती थी अपनी दोस्तों से,
कभी-कभी अपनी मिस जी से, तो कभी अपने सर जी से भी,
लेकिन झुक जाती थी, और खिलखिला कर हँस देती।

कभी बैठ जाती थी उनकी कुर्सी पकड़ कर,
उनसे अपनी सारी बातें कह देती, एक दोस्त समझकर,
सोचती हूँ उनके साथ बीते यादों का एहसास लिखूँ,
सोच रही हूँ एक किताब लिखूँ।

अगर मुझे कुछ न समझ आए, जब थी वह पढ़ाती,
मैं रोने लगती थी, तो चुप वह कराती,
नाम है उनका शशि, चंद्रमा-सी मुस्कान लिए,
अँधियारों में है प्रकाश फैलाती।

दुखों का सामना बहुत किया वह,
कभी नहीं है उससे हारी,
उन पर बीती कठिनाइयों का,
थोड़ा तो सार लिखूँ,
सोच रही हूँ एक किताब लिखूँ।।

अंजू वर्मा
बी.ए. हिंदी ऑनर्स
द्वितीय वर्ष

इंसानियत कहाँ है?

कितनी हसीन होती ये दुनिया,
अगर इंसानियत बाकी होती।
पूरा विश्व एक परिवार होता,
जहाँ खुलकर जीने की आज़ादी होती।

क्या मिला आपस में लड़कर,
क्या मिला अपनों को बाँटकर?
कभी धर्म के नाम पर काटा,
कभी उसी को बाँटा,
जिसने ये हसीन दुनिया बनाई थी।

क्या उसने बाँटा हमें?
क्या उसने काटा हमें?
जिसने बनाया है हमें,
वो मिटा भी सकता है।

होश में आ जा, इंसान,
अभी भी वक्त है तेरे पास।
कहीं ये गुज़र गया
और वो आ गया,
तो तू पछता भी नहीं पाएगा।

कभी बाँटता इंसानों को,
कभी माँ-बहनों को करता शर्मसार।
जिनकी बदौलत इस दुनिया में आया,
उन्हें ही कर दिया तूने बीच बाज़ार
लाचार।

क्या तेरा मन नहीं काँपा,
ये सोचकर कि तेरा अंत क्या होगा?

खैर मना अपनी, जब तक
वो सहन कर रहा है।
खौफ रख उस दिन का,
जब वो असंतुष्ट हो जाएगा,
तुझे तुझसे ही मरवाएगा।

- कीर्ति बंसल
बी. ए. हिन्दी (विशेष)
प्रथम वर्ष

गुरु माँ — हर नारी की

एक माँ जो जन्म देती है,
निश्चय ही हम उसके कर्जदार हैं।
लेकिन एक और माँ है,
जो सब लड़कियों की माँ है—
हमारी गुरु माँ सावित्रीबाई फुले।

बेटियों के लिए तो हर माँ-बाप
अच्छा सोचते हैं,
पर करना सबके बस की बात नहीं।
लड़ गई वो रानी,
जिसे लोग रोज सताया करते थे,
जीत गई वो दुनिया सारी,
जिन्हें लोग रोज फँसाया करते थे।
तोड़ दिया उनका गुरूर, खोखली परम्पराओं का,
जीत गई उन दकियानूसी सोच वालों से,
जो बेटियों को चारदीवारी में बंद किया करते थे।

तोड़ दो उन लोगों के गुरूर को,
जिन्हें लड़कियाँ सिर्फ चारदीवारी के अंदर
अच्छी लगती हैं।
अगर आज़ादी से जीने वाली बुरी लगती है,
तो बन जाओ न बुरी—
क्योंकि “अच्छी लड़कियाँ”
अक्सर गुलामी किया करती हैं।
जीत लो दुनिया सारी,
छोड़ दो दुनिया की गुलामी।

(गुलामी करके “अच्छा” बनने से बेहतर है,
आज़ाद जीवन पाकर “बुरा” बन जाना।
आज इस माँ के आजीवन कर्जदार हैं हम लड़कियाँ—
शत-शत नमन है, माँ, आपको।)

दिव्या कुमारी
बी. ए. विशेष (हिन्दी)
प्रथम वर्ष

संघर्ष

संध्या का समय था। सीमा रसोई में चूल्हे पर भोजन बना रही थी। अचानक अत्यधिक गर्मी के कारण वह बेहोश हो गई। तभी उसकी बड़ी बेटी लक्ष्मी खेत से गायों के लिए चारा लेकर घर पहुँची। हाथ-मुँह धोकर जब वह रसोई की ओर गई, तो उसने अपनी माँ को बेहोश पड़ा देखा। लक्ष्मी, जो लगभग 18 वर्ष की थी,
तुरंत अपनी माँ को उठाकर खटिया पर लिटाती है और उन पर पानी के छींटे डालती है। कुछ ही देर में सीमा को होश आता है।

सीमा लक्ष्मी से कहती है कि बहुत गर्मी है और वह थक गई होगी, इसलिए उसे भोजन करने को कहती है। तभी लक्ष्मी अपनी छोटी बहन पूजा के बारे में पूछती है, जो अभी तक स्कूल से नहीं लौटी थी। सीमा बताती है कि शायद वह अपनी सहेली काजल के घर पढ़ने गई होगी, क्योंकि उसकी हाई स्कूल की परीक्षा निकट थी।
पूजा 15 वर्ष की मेहनती लड़की थी, जो पढ़ाई में बहुत लगन से जुटी हुई थी।

लक्ष्मी घर के कामों के साथ-साथ पशुओं की देखभाल और खेतों में काम भी करती थी। उनके पिता रामलाल भी दिनभर मेहनत करते थे, लेकिन एक दिन वे भी अत्यधिक गर्मी और भूख के कारण बेहोश हो गए। उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहाँ डॉक्टर ने आराम की सलाह दी। इसके बाद घर की सारी जिम्मेदारियाँ लक्ष्मी के कंधों पर आ गई।
पूजा घर के कामों में मदद करती और अपनी पढ़ाई भी जारी रखती।

रामलाल को यह देखकर दुख होता था कि जिस बेटी की शादी करनी चाहिए, वही घर की जिम्मेदारियाँ उठा रही है। लेकिन लक्ष्मी ने कभी हार नहीं मानी। उसने पूजा को पढ़ने के लिए प्रेरित किया।
कुछ समय बाद पूजा ने दसवीं की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया और उसे छात्रवृत्ति भी मिली। यह पूरे परिवार के लिए गर्व का क्षण था।

गाँव के लोग पूजा की पढ़ाई से जलने लगे और तरह-तरह की बातें करने लगे। वे कहते कि बेटियों को पढ़ाकर क्या फायदा, आखिर उन्हें शादी करके घर ही जाना है। एक दिन पड़ोस की दादी ने भी पूजा को ताना मारा। इससे वह दुखी हो गई, लेकिन लक्ष्मी ने उसे समझाया कि उसे दूसरों की बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए और

अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहना चाहिए।

पूजा ने दृढ़ निश्चय किया कि वह कलेक्टर बनेगी। इसी बीच रामलाल की तबीयत और बिगड़ गई और अंततः उनका निधन हो गया। परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा, लेकिन लक्ष्मी ने हिम्मत नहीं हारी और अपनी माँ और बहन को संभाला।

पूजा आगे की पढ़ाई के लिए इलाहाबाद चली गई। वहाँ आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी उसने अपनी पढ़ाई जारी रखी। कई बार उसे भूखे पेट भी सोना पड़ता था, लेकिन उसकी माँ और बहन किसी तरह पैसे जुटाकर उसकी मदद करती रहीं। पूजा ने कठिन परिश्रम से पहले प्रारंभिक परीक्षा, फिर मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण की।

अंततः इंटरव्यू के समय जब उससे पूछा गया कि वह कलेक्टर क्यों बनना चाहती है, तो उसने उत्तर दिया कि वह समाज में बेटियों के प्रति नकारात्मक सोच को बदलना चाहती है और एक बेहतर समाज का निर्माण करना चाहती है। उसके उत्तर से परीक्षक प्रभावित हुए।

कुछ समय बाद परिणाम घोषित हुआ और पूजा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। पूरा परिवार खुशी से झूम उठा। पूजा ने सबसे पहले उसी दादी को मिठाई खिलाई, जिन्होंने कभी उसे ताना मारा था।

इस प्रकार संघर्ष, मेहनत और आत्मविश्वास के बल पर पूजा ने अपने सपनों को साकार किया और समाज के लिए एक प्रेरणा बन गई।

- अंजू वर्मा
बी.ए. हिंदी (विशेष)
द्वितीय वर्ष

हम भारतीय नारी हैं

इतिहास गवाह है हमारे संघर्ष का,
यूँ ही नहीं मिली आज़ादी की ये धूप।
हर मोड़ पर परखी गई हैं हम,
हर कदम पर झेला है रूप-अरूप।

रानी लक्ष्मीबाई की तलवार में जो ज्वाला थी,
वो आज भी हमारे लहू में जलती है।
रानी पद्मावती की अग्नि-सी अस्मिता,
हर नारी के मन में पलती है।

झलकारी बाई का साहस, निर्भय कदम,
हमको आगे बढ़ना सिखाता है।
इंदिरा गांधी का अटल इरादा,
हर मुश्किल से लड़ना सिखाता है।

सावित्रीबाई फुले की शिक्षा की ज्योति,
अंधेरों में भी उजाला करती है।
अपमान सहकर भी जो न रुकीं,
वो हम सबको हौसला देती हैं।

हम वही शक्ति, वही पहचान हैं,
जिसने खुद को खुद से मिलाया है।
हर बंधन को तोड़कर आगे,
अपने अस्तित्व को अपनाया है।

उठो बहनों, अब वक्त हमारा है,
क्यों रुकें, जब आसमान सारा है?

पढ़ना है, लड़ना है, बढ़ना है,
हर सपना अब सच करना है।

अब बहुत हुआ ये समाज का वार,
अब हम भी हैं पूरी तरह तैयार।
ना झुकेंगे, ना रुकेंगे हम—
क्योंकि हम भारतीय नारी हैं, अपार।

- कीर्ति बंसल
बी. ए. हिन्दी (विशेष)
प्रथम वर्ष

कलम का बादशाह

मेरे बाबा साहब..

आपको अवतार कहूँ या भगवान,
शब्दों की कमी है,
आपने दिया हमें अधिकार,
तभी इन आँखों में
खुशियों की नमी है।

आपको सूर्य कहूँ या शिव,
आप ही तो हो हमारे सुखमय
जीवन की नींव।

आपको परमपिता कहूँ?
या कहूँ भाग्यविधाता?
आपको विद्वान कहूँ,
या कहूँ संविधान निर्माता,
आप ही तो हो हमारे
आज़ाद ज़िंदगी के दाता।

हमारे हाथों में कलम की
स्याही न लगी होती,
यदि आपने ज्ञान की
ज्योति न जलाई होती।

अकेले ही लड़ते रहे,
इस निर्दयी समाज से,
करते रहे संघर्ष,
जीवन भर इस आस से,

कि...
मिले हमें आज़ादी,
इस पाखंडी समाज से।

हमारा भारत आज़ादी से
न जी रहा होता,
अगर हमारे देश में
इस हीरे का जन्म न हुआ होता।

जब भी सोचूँ—आप हो महान,
मिल जाती है हमारे
पंखों को एक नई उड़ान।

हमारा जीवन ज्योतिर्मय न बना होता,
आपने यदि इतना संघर्ष न किया होता।

स्त्रियों को सम्मान न मिला होता,
आपका लिखा संविधान न होता,
बंधन में आज भी बंधी रहतीं,
यदि आपका दिया
अधिकार न मिला होता।

आप हो भारत रत्न, आप हो विद्वान,
आपसे ही मिली हमें अपनी पहचान,
पा लेते हैं हम नई पहचान उस दिन,
पढ़ लेते हैं आपका संविधान जिस दिन।

हर बार एक ही शब्द निकले इस दिल से,
जय भीम, जय संविधान कहें हम फिर से,
अमर रहो बाबा, आप सदा हर महफ़िल में।

- दिव्या कुमारी
बी. ए. विशेष (हिन्दी)
प्रथम वर्ष

टूटते सपने

यह कहानी एक ग्रामीण जीवन के संयुक्त परिवार की है, जिसमें माता-पिता एवं उनके चार पुत्र, उनकी पत्नियाँ और बच्चे रहते हैं।

कहानी की शुरुआत कुछ इस प्रकार होती है—सबसे बड़े बेटे का नाम लौटूं है। उनका एक किराने की दुकान है। उनकी पत्नी का नाम श्यामलाली है। उनके चार बेटियाँ और एक बेटा है। अब बात आती है मझले बेटे की। उनकी पत्नी का नाम सीमा है और उनकी दो बेटियाँ हैं। बजरंगी, जो कि परिवार का एक और बेटा है, दिल्ली में मजदूरी करता है ताकि वह परिवार के भरण-पोषण में कुछ सहयोग कर सके।

तीसरे बेटे का नाम चंद्रभान है। उनका अभी-अभी विवाह हुआ है। वे एक कोटेदार हैं और एक पैर से थोड़ा विकलांग हैं। उनकी पत्नी का नाम सरिता है, जो अभी अपने मायके में ही रहती है क्योंकि उसका गौना नहीं हुआ है। सबसे छोटे बेटे का नाम रामसहाय है, जिसकी शादी की बात चल रही है और वह अभी पढ़ाई कर रहा है।

सभी अपने-अपने कार्यों में लगे हुए हैं। पिता जी बूढ़े हो चुके हैं, इसलिए ज्यादा काम नहीं कर पाते। कभी-कभी वे खेतों में घूमने चले जाते हैं और गाय-भैंसों के लिए चारा ले आते हैं। कभी मेड़ों पर पड़ी सूखी पत्तियाँ इकट्ठा करके बोरी में भर लेते हैं, जो सर्दियों में आग जलाने के काम आती हैं। माता जी कभी-कभार बड़े बेटे की दुकान पर चली जाती हैं, अन्यथा घर पर ही रहती हैं।

घर की बड़ी बहू बाहर के कार्य संभालती है, जैसे गाय-भैंसों का दूध निकालना और उन्हें चारा खिलाना। दूसरी बहू सीमा का काम भोजन बनाना है। वह चूल्हे पर सबके लिए खाना बनाती है और कुएँ से पानी भरकर लाती है। सरिता अभी मायके में ही है, इसलिए घर के कामों में शामिल नहीं हो पाती।

समय बीतता है और एक दिन पता चलता है कि सीमा माँ बनने वाली है। पहले से ही उसकी दो बेटियाँ हैं। जैसे ही यह बात लौटूं को पता चलती है, उसके मन में घर के बँटवारे का विचार आने लगता है। कुछ समय बाद सीमा एक और बेटी को जन्म देती है। तभी बजरंगी शहर से घर आता है। वह घर का बँटवारा नहीं चाहता। वह अपने बड़े भाई से कहता है, "भैया, मेरी दो छोटी-छोटी बेटियाँ हैं और मैं बाहर रहता हूँ।" लेकिन लौटूं यह कहकर मना कर देता है कि वह अब उनकी बेटियों का खर्च नहीं उठा सकता।

इसी दौरान रामसहाय दसवीं की परीक्षा में फेल हो जाता है, लेकिन वह दोबारा पढ़ना चाहता है। लौटूं उसे पढ़ाने से मना कर देता है। तब सीमा रामसहाय की पढ़ाई का समर्थन करती है, जिससे वह बहुत खुश हो जाता है।

बजरंगी घर का बँटवारा रोकने के लिए अपनी बड़ी बहन के पास चला जाता है और उसे सारी बात बताता है। उसकी बहन, जो पहले पूरे परिवार को संभाल चुकी थी, सब समझती है, लेकिन अब वह भी कुछ खास नहीं कर पाती। बजरंगी वहीं से वापस दिल्ली चला जाता है, यह सोचकर कि शायद उसके जाने से बँटवारा रुक जाए, लेकिन अंततः बँटवारा हो ही जाता है।

अब सीमा अपने बच्चों के साथ अलग जीवन जीने लगती है। वह सुबह उठकर अपनी बेटियों को तैयार करती है और स्कूल भेजती है, फिर छोटी बच्ची को सुलाकर खेतों में काम करने चली जाती है। समय धीरे-धीरे बीतता रहता है।

जब बजरंगी वापस घर आता है, तो गाँव वाले उसे भड़काते हैं कि बेटियाँ बोझ होती हैं। यह बात उसके मन को प्रभावित करती है और वह अपनी छोटी बेटी के प्रति उदासीन होने लगता है। वह सीमा को भी ताने देता है।

जैसे-जैसे वह छोटी बच्ची बड़ी होती है, लोग उसे ताना देते हैं कि उसके जन्म के साथ ही घर का बँटवारा हो गया। स्कूल में जब उसकी सहेलियाँ अपने संयुक्त परिवार की बातें करती हैं—दादा-दादी, चाचा-चाची के साथ रहने की—तो वह बहुत निराश हो जाती है। उसे हमेशा लगता है कि उसके पास ऐसा परिवार क्यों नहीं है।

समय के साथ जब वह बड़ी होती है, तो उसके दादा-दादी की मृत्यु हो जाती है और चाचा-चाची भी अलग हो जाते हैं। फिर भी उसके मन में हमेशा यही इच्छा बनी रहती है—काश उसके पास भी एक संयुक्त परिवार होता।

अंजू वर्मा
बी.ए. हिंदी विशेष
द्वितीय वर्ष

अस्मिता का सौदा

**औरत ही औरत की दुश्मन होती है,
ये बात हमने सिर्फ सुनी थी कभी,
लेकिन कुछ औरतों ने तो अपनी हरकतों से
हमें इसे सच में दिखा दिया।**

**क्या सच में हर लड़की की ख्वाहिश
सिर्फ एक पैसे वाला पति होता है?
क्या हर लड़की को अपने स्वाभिमान से
ऐसा समझौता कर लेना चाहिए?**

**कमबख्त ये पैसा भी कैसी चीज़ है,
जिसके लालच में इंसान सब भूल जाता है।
कुछ लड़कियों ने तो बिना सोचे-समझे
अपनी अस्मिता तक दांव पर लगा दी।**

**अपनी पहचान खोकर
उन्होंने वो रास्ता चुना—
जिसका अंजाम शायद उन्हें खुद भी नहीं पता।**

**पर सवाल अब भी वही है—
आखिर क्यों डरती हैं वो संघर्ष से?
क्यों चमक-दमक के आगे
स्वाभिमान इतना फीका पड़ जाता है?**

*- कीर्ति बंसल
बी. ए. हिन्दी (विशेष)
प्रथम वर्ष*

मंज़िल

चाहे राहें काँटों से भरी हों या फूलों से,
हमें चलना है, रुकना नहीं,
गिरे, या बिखरे ठोकरों से,
फिर भी आगे बढ़ना, रुकना नहीं।

जीत हो या हार हो स्वयं से,
कदम बढ़ाना है, खींचना नहीं,
बिना जले सोना निखरता नहीं,
ऐसे ही कदम बढ़ाने हैं, रुकना नहीं।

रुकने वाला सदा पीछे रह जाता है,
निरंतर चलने वाला ही आगे तक जाता है।

क्यों डरे गिरने से,
जब उठना है फिर से,
रोना नहीं ज़ख्मों से,
आख़िर सफलता मिलती है
निरंतर आगे बढ़ने से।

खुद से प्यार करो, आगे बढ़ो,
जैसे पक्षी आसमाँ की चाह रखता है...
आसमाँ छू के आज़ादी पा लेता है,
जब खोल के पंख उड़ान भरता है।

- दिव्या कुमारी
बी. ए. विशेष (हिन्दी)
प्रथम वर्ष

6 मार्च 2025 की घटना : संस्मरण

6 मार्च 2025 की घटना (संस्मरण)

मैं आज श्यामलाल कॉलेज जा रही थी। मेरे पास मात्र ₹90 थे। मेट्रो का किराया ₹50 था। मैं कॉलेज से ग्रीन पार्क मेट्रो स्टेशन पहुँची, वहाँ से मैंने वेलकम मेट्रो स्टेशन का टिकट लिया। मैं स्टेशन पहुँच गई। रास्ते में मैंने राजीव चौक से मेट्रो बदली थी। अब मैं वेलकम मेट्रो स्टेशन पर पहुँचकर रिक्शा लिया कॉलेज तक जाने के लिए, क्योंकि मैं पहली बार जा रही थी तो मैंने रिक्शा का किराया ₹20 दिया। फिर मैं कॉलेज पहुँची। उस कॉलेज में मेरा एक दोस्त था। मैं यह तो बताना भूल ही गई थी कि मैं वहाँ किसलिए आई हूँ। चलो बताती हूँ, मेरा वहाँ स्वरचित कविता पाठ की प्रतियोगिता थी। मैंने किसी प्रतियोगिता में भाग लिया था, तो वह लड़का मुझे वहीं मिला। लेकिन उससे मिलने के बाद मुझे पता चला कि वह मेरे गाँव से थोड़ी दूर का है, उसका नाम बृजेंद्र है।

तो मैं उसके कॉलेज में जब उससे मिली, तो वही हमारे गाँव के संस्कार उसके पास थे। मैं तो आश्चर्यचकित हो गई कि कोई लड़का गाँव से आकर भी अपने संस्कार नहीं भूला। उसने मुझसे हाथ जोड़कर नमस्कार किया और जहाँ पर प्रतियोगिता हो रही थी, उस कक्षा में ले गया। उसने अपने अध्यापकों से मेरा परिचय भी कराया। उसने कहा, "आप बैठ जाइए, मैं आता हूँ।" फिर वह कई अपने मित्रों से भी मेरा परिचय कराया। मैं थोड़ी भयभीत थी कि मैं कैसे कविता को मंच पर बोलूँगी। मैंने कहा, "भाई, मुझे थोड़ा डर लग रहा है।" लेकिन उसने मुझे समझाया कि डरो मत।

फिर प्रतियोगिता का प्रारंभ हुआ। माँ सरस्वती का नाम लेकर सभी प्रतिभागियों ने बहुत ही अच्छी-अच्छी कविता का पाठ किया। कोई कविता श्रृंगारिक थी तो कोई करुणामयी, कोई तो वीरता से ओत-प्रोत मिली। मैंने तो बहुत शांति में, शायद शांत रस में मेरी कविता रही हो। मुझे अभी उतना पता नहीं है कि कविता कैसी-कैसी लिखी जाती है, लेकिन मैंने प्रयास किया। मैंने गाँव के ऊपर कविता लिखी थी, उसी का वाचन किया।

प्रतियोगिता का समय समाप्त होने को था, उसके बाद सभी प्रतिभागियों को जलपान दिया गया। उसमें एक समोसा था और एक फ्रूटी थी। उसके बाद विजेताओं का परिणाम घोषित किया गया, उसमें ना तो मेरा नाम था और ना ही मेरे दोस्त का। सबके मन में यही विचार था कि मैं विजयी बनूँ, लेकिन मैं ज्यादा दुखी भी नहीं हुई क्योंकि मैं पहली बार कविता पाठ की थी, तो गलतियाँ हुई होंगी मुझसे।

फिर उसके बाद मेरा दोस्त चला गया, उसको कोई काम था। फिर मैं भी चली आई। इस बार मैंने कॉलेज से रिक्शा नहीं लिया और पैदल चलकर मेट्रो पहुँची। तो देखा कि केवल मेरे पास ₹20 ही हैं और तो मोबाइल भी बंद होने वाला है, मात्र दो प्रतिशत चार्ज था। फिर मैंने एक दोस्त के पास फोन किया, तो उसने बोला कि मैं टिकट ऑनलाइन निकाल देता हूँ। लेकिन ऑनलाइन टिकट में वेलकम मेट्रो का नाम नहीं दिख रहा था। फिर मैं बहुत चिंतित हो गई और सोचने लगी कि घर कैसे जाऊंगी? यही सोचकर मैं रो पड़ी।

तब मैं एक आर्मी वाले के पास गई, मैंने उनसे मदद के लिए बोली। लेकिन उन्होंने कोई बहाना बनाकर मेरी मदद नहीं की। फिर वहीं दूसरे आर्मी वाले थे, तो उन्होंने एक आर्मी लेडी को बुलाया। उन्होंने मुझसे पूछा कि कितने रुपए की जरूरत है? मैं बोली, "₹20 की।" तब उन्होंने मुझे ₹20 दिए। लेकिन अभी भी मुझे ₹10 की और जरूरत थी। तभी उस भले आदमी ने पूछा, "और चाहिए?" मैं बोली, "₹10 और चाहिए।" तब उन्होंने मुझे ₹20 दिए और बड़े ही प्रेम से बोले, "जा अब तू।"

मैं इतनी खुश हो गई कि सरदार वाले आर्मी ने मेरी मदद नहीं की, लेकिन इन दोनों ने मेरी मदद की। और मैं सोचने लगी कि कोई सैनिक कठोर नहीं होता, उसका हृदय कोमलता से, संवेदनाओं से भरा होता है। यह घटना मेरे जीवन में बहुत ही अहम भूमिका निभाई है।

- अंजू वर्मा
बी. ए. हिन्दी विशेष
द्वितीय वर्ष

बूंद से समंदर तक

**कैसी ये दिल लगी है,
तू आ गई ज्ञान की ज्योति बनकर।**

**जब तक तू नहीं मिलती,
तड़प का एहसास भी नहीं होता,
पर तेरी एक झलक,
एक कतरा मिल जाए अगर,
तो फिर सब्र भी साथ छोड़ देता है।**

**जब तक पूरी तरह तुझे पा न लूँ,
मन को कहीं चैन नहीं मिलता।**

**ये कैसा अमृत है तेरा,
जब तक दूर रहे,
तो कोई हलचल नहीं,
पर एक बूंद मिल जाए,
तो फिर अधूरापन सहा नहीं जाता।**

**कैसा ये फितूर है,
जो मुझ पर इस कदर छा गया है,
कि खुद को भी तुझमें
डुबो देने का मन करता है।**

**सुना है,
जिसने तुझसे नाता जोड़ा,
तू उसे हर बंधन से मुक्त कर देती है,
और फिर वो किसी के सामने
झुकता नहीं।**

क्या कहना तेरा...
तू तो बेमिसाल है।

वाह रे अमृत की बूंद,
क्या कमाल है तू...

कीर्ति बंसल।
बी. ए. हिन्दी (विशेष)
प्रथम वर्ष

मन का किस्सा

मन का कुछ ऐसा किस्सा है,
कहता कुछ, करता कुछ और है।
यह मनचला अक्सर पीछे खींच देता है,
जब लगता है अब हमारा दौर है।

मानो या न मानो,
मन करता अक्सर मनमानी है।
हमेशा मन का करना
सही नहीं उतना,
समझदारी से काम करना
सही है जितना।

मनमानी अक्सर
पीछे कर देती है हमको,
क्योंकि ज़्यादा सुविधा
कमज़ोर बना देती है मन को।
फिर भी क्यों नहीं
छोड़ पाते हैं इसको?

क्या है इसका समाधान,
समझ नहीं पाते।
जब होता है अपमान,
सह भी नहीं पाते...।

- दिव्या कुमारी
बी. ए. विशेष (हिन्दी)
प्रथम वर्ष

दिल की उलझन

अजीब-सी हलचल है दिल के अंदर,
जैसे सब कुछ होकर भी कुछ अधूरा हो।

कभी हँसी खुद-ब-खुद होठों पर आ जाती है,
तो कभी बिना वजह आँखें भारी हो जाती हैं।

न सही का पता, न गलत की पहचान,
बस एक धुंध-सी छाई है हर ख्याल पर।

शायद ये इश्क ही है,
जो समझ से परे होता है...
धीरे-धीरे हमें हमसे ही छीन लेता है,
और किसी और में बसाता जाता है।

- कीर्ति बंसल
बी. ए. हिन्दी (विशेष)
प्रथम वर्ष

मिडिल क्लास: एक एहसास

दीवारों पर छाप है मजदूर की,
फिर भी मुस्कान है हर रोशनी की।
ना शिकायत, ना गिला किसी से,
सपनों को सजाए रहते हैं दिल से।

पिता सुबह सबसे पहले उठते हैं,
बिना थके दिन भर एक बोझ से जूझते हैं,
माँ एक कप चाय में प्यार मिलाती है,
बच्चों की फीस में अपने ख्वाब छुपाती है।

बचपन एक इस्तेमाल किए बैग के साथ चलता है,
नए कपड़ों के सपने भी हर पल पिघलते हैं।

लेकिन आँखों में एक चमक होती है,
हर कमी में भी एक आशा होती है।

ईएमआई, बिजली का बिल और महंगाई का दाग,
फिर भी नहीं छोड़ते खुशी का स्वाद।

शादियों में हर बार एक ही कपड़े पहनते हैं,
पर इज्जत के गहने असली होते हैं।

हर त्योहार में थोड़ा बचाकर खरीदते हैं,
पर खुशी से ज्यादा कुछ भी जरूरी नहीं समझते हैं।
ना रिश्वत, ना चोरी—सिर्फ ईमानदारी का सहारा,
मिडिल क्लास का हर दिन है एक नया सितारा।

ना आलस में जीते हैं,
ना शिकायत में रोते हैं,
बस एक बेहतर कल की चाहत में
हमेशा खिलते रहते हैं।

यह कहानी है उनकी,
जो अखबार के आखिरी पन्ने पर होते हैं,
मगर हर देश के सच्चे हीरो भी वही होते हैं।

ना समझना मिडिल क्लास लोगों को कमजोर,
क्योंकि असल में मजबूत वही होते हैं।

अंशिका
बी.ए. हिंदी ऑनर्स
द्वितीय वर्ष

अपनों के बीच तन्हा

इतने बेबस कब हो गए—पता ही नहीं चला,
जहाँ हक समझा था, वहीं से ताने मिले।

जिसे अपना सब कुछ दिया,
आज वही हमारी खामोशी में मौत की दुआ करते हैं।

जी रहे हैं... पर क्यों, ये सवाल बाकी है,
जीने की चाह तो उसी दिन मर गई थी,
जब पापा साथ छोड़ गए थे।

अपनों के लिए खुद को संभाला था,
आज वही हमें गिरता देखना चाहते हैं।

क्या हम गलत हैं, या ये वक्त की सज़ा है?
हर तरफ दर्द है, हर तरफ खामोशी।

अब थक चुके हैं...
हिम्मत भी साथ छोड़ रही है,
दिल टुकड़ों में बिखर चुका है।

अपनों की बातें अब ज़हर-सी लगती हैं,
और खुद को संभालना भी अब मुश्किल है।

न जाने कब तक यूँ ही चलते रहेंगे,
और कब फिर से खुद को पा सकेंगे...

बस एक सवाल रह गया है—
क्या हम सच में इतने बुरे हैं?

- कीर्ति बंसल
बी. ए. हिन्दी (विशेष)
प्रथम वर्ष

विदाई का अर्थ

कुछ रिश्ते शब्दों से नहीं,
बस एहसासों से जुड़ जाते हैं।
कुछ रास्ते ऐसे होते हैं,
जो चलते-चलते दिल में बस जाते हैं।

कॉलेज की उन गलियों में
हँसी की गूंज रह जाती है,
और विदाई के उस पल में
आँखें कुछ कह नहीं पाती हैं।

हम सब अपने-अपने रास्तों पर
एक दिन आगे बढ़ जाएंगे,
पर इन यादों के छोटे-छोटे दीप
दिल में हमेशा जलते जाएंगे।

क्योंकि सच यही है—
हर मुलाकात का अंत विदाई होता है,
और हर विदाई के पीछे
एक खूबसूरत कहानी छिपी होती है।

- शैली चौधरी
बी. ए. हिंदी (विशेष)
द्वितीय वर्ष

मंज़िल की ओर

अजीब-सी लहर उठी है आज इस दिल में,
खुशी का समंदर है... पर आँखों में हल्का-सा डर भी है।
कहीं ये नज़रें, कहीं ये दुनिया,
हमारी मुस्कुराहटों को छीन न ले जाए।

ये लम्हे यूँ ही नहीं आए,
इनके पीछे कई रातों की खामोशी है,
कई अधूरी ख्वाहिशों की कहानी है।

जब शुरुआत इतनी हसीन लग रही है,
तो सोचो... मंज़िल कितनी दिलकश होगी।

आज जो मिला है,
उसने चाहत को और गहरा कर दिया है,
अब देखने की तड़प ही जीने की वजह बन गई है।

अब ये कदम रुकने वाले नहीं,
अब ये सफर थमने वाला नहीं,
हम तो चल पड़े हैं...
अपनी मंज़िल को अपना बनाने।

- कीर्ति बंसल
बी. ए. हिन्दी (विशेष)
प्रथम

ज़माने की नज़र में आती हूँ

आँखों में आस लिए जब कदम बढ़ाती हूँ,
न जाने क्यों ज़माने की नज़र में आ जाती हूँ?
उनकी सुनूँ या खुद की,
सोच-सोचकर घबराती हूँ,
न जाने क्यों ज़माने की नज़र में आती हूँ।

चाहती हूँ बहुत कुछ करना, पर
डरती हूँ कि...
कहीं मिट न जाऊँ,
कैसे आगे कदम बढ़ाऊँ?
सोच-सोचकर घबराती हूँ,
न जाने क्यों ज़माने की नज़र में आती हूँ।

ये ज़माना स्वार्थ का घराना है,
जहाँ से एक कण भी
बिना भुगतान किए नहीं मिल पाता है।
इस स्वार्थ ने दुनिया को
कठपुतलियों की तरह नचाया है,
और नाचता रह जाएगा,
जब तक स्वार्थ का अंत नहीं होगा,
तब तक इंसान संत नहीं बन पाएगा।

सोचती तो बहुत कुछ हूँ, लेकिन
बहुत कुछ करने की हिम्मत नहीं हो पाती,
क्योंकि...
घबराती हूँ पर्दे के पीछे छिप जाने से,
न जाने क्यों ज़माने की नज़र में आती हूँ?

- दिव्या कुमारी
बी. ए. विशेष (हिन्दी)
प्रथम वर्ष

हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

हिंदी दिवस विशेष : व्याख्यान सत्र

मुख्य अतिथि : श्री अमित अरोड़ा

वार्षिकोत्सव : 'एआई और हिंदी' विषय पर कार्यशाला

मुख्य अतिथि : निशी भाट (वरिष्ठ पत्रकार)

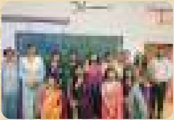

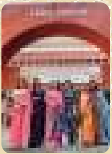
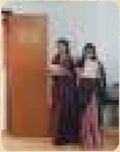

निशी भाट के साथ हिंदी साहित्य परिषद के सदस्य

सम्पादक मंडल

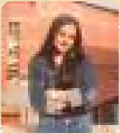

शताक्षी सिंह
(द्वितीय वर्ष)

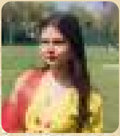

प्रिया पाण्डेय
(द्वितीय वर्ष)

अंशिका
(द्वितीय वर्ष)

प्रिया
(द्वितीय वर्ष)

ग्राफिक डिजाइनर

शताक्षी सिंह
(द्वितीय वर्ष)

प्रिया
(द्वितीय वर्ष)

हिंदी विभाग के फैकल्टी सदस्यों के साथ हिंदी साहित्य परिषद के सदस्य

हिंदी साहित्य परिषद की सदस्य एवं हिंदी विभाग की छात्राएँ

"कलरव": विदाई समारोह
हिन्दी साहित्य परिषद

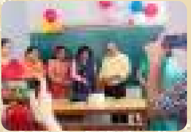

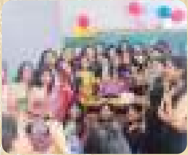

दिनांक : 24 अप्रैल 2025

छात्राओं द्वारा निर्मित कलाकृतियाँ

- रिशिका सूद
बी.ए.हिंदी (विशेष)
प्रथम वर्ष

- रिशिका सूद
बी.ए.हिंदी (विशेष)
प्रथम वर्ष